दैनिक भास्कर 07 March, 2021 Noida - 07 Mar 2021 - Page 6

जीवन में अंकों का रहस्यमय खेल

गीतांजलि सक्सेना

नजरिया / संयोग

चलिए, इस बार अंकों की जादुई दुनिया में ताक-झांक करने की कोशिश करते हैं। हमारा जीवनकाल जन्म के समय से चलकर अन्त तक निश्चित दिन और समय के चक्र पर ही निर्धारित रहता है। तात्पर्य यह है कि हर व्यक्ति का जीवन, अंकों के आधार पर ही निर्भर रहता है।

दरअसल, यह भी एक सच है कि अंकों की प्रक्रिया हमारी जीवनशैली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह स्पष्ट है कि अंकों के बिना एक पल भी जीना मुश्किल है। असल में जीवन ही अंकों का खेल है। अंकों के रहस्यमय संयोगों को समझने के लिए अपने अनुभवों को तर्क की कसौटी पर खड़ा कर के परखने की कोशिश करनी होगी। हम अक्सर लोगों से सुनते हैं कि अमुक दिन या वह तिथि शुभ नहीं रही होगी, तभी काम में सफलता नहीं मिली है।

हो सकता है इस तरह का समरूप अनुभव उन्हें शास्त्र, विज्ञान और ज्योतिष से जोड़ने के लिए बाध्य करता हो। इस कारणवश हर घटित हुई घटना को उन्हें शुभ व अशुभ दिनांक या समय से जोड़ते हुए देखा जाता है। यह भी सम्भव है कि इन लोगों का अंकगणित पर विश्वास करना फीलगुड अच्छा महसूस करने में मदद मिलती होगी। इन परिस्थितियों में इन लोगों की शारीरिक भाषा और सोशल इंटरैक्शन से अच्छी वाइब्स ...जो कि एक भावनात्मक तरंग होती है, उसका असर निस्संदेह ही आसपास के लोगों पर भी सकारात्मक प्रभाव महसूस करा जा सकता है। यही नहीं, अन्य लोगों का संख्या विज्ञान की ओर ध्यान आकर्षित करने में एक हद तक सफल भी हो जाते हैं। उनकी जिज्ञासा उन्हें अंक विज्ञान की गणना और गणित को समझने के लिए प्रेरित करता है। सच तो ये ही है कि यह आपको अलग तरीके से सोचने की क्षमता को विकसित करने में मदद भी करता है। इस स्थिति को देखने का एक नजरिया भी कह सकते हैं। इस पर प्रकाश डालने का मकसद भी यही है।

संख्याएँ, आंकड़े या नंबर ये सभी अंक के ही पर्यायवाची हैं। अंकशास्त्र अंकों का विज्ञान है। अंक ज्योतिष भविष्य जानने की विधा है। अंक विशेषज्ञ के अनुसार, हर व्यक्ति के जन्म तिथि के हिसाब से कोई न कोई मुख्य अंक होता है। यह अंक उसके जीवन में होने वाले लाभ व हानि को पता लगाने में मददगार साबित हो सकते हैं। इसके माध्यम से अंकों के गणित के आधार पर भविष्य और आप के कार्यों के सफल व सम्पन्न होने का सही समय बता कर निर्धारित किया जा सकता है।

यूं तो अंकों की गणना का सिलसिला बहुत पुराना है। संख्या विज्ञान प्रयोग प्राचीनकाल से चला आ रहा है। उस समय गणना प्रणाली का स्वरूप भिन्न था। पहले मनुष्य अपने जीवन में वस्तुओं के माध्यम से आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया में गणना करता था। उस समय जानवरों और अन्य वस्तुओं को विनिमय का आधार बनाया जाता था। यही नहीं, उस समय

हम सभी सुबह से शाम तक की दिनचर्या समय-सारणी के अनुसार चलाते हैं। इसे टाइम मैनेजमेंट के नाम से परिभाषित किया गया है। फोन पर मित्रों और परिवार के साथ बातचीत अंकों के जरिये ही सम्भव है। आपसी दूरी अंकों के सौजन्य से ही कम होने का अहसास हो पाता है।

दीवार पर रेखाएं खींचकर, पत्थरों के टुकड़ों को गिनकर या निश्चित मात्रा में अन्न को ही व्यापार का आधार माना जाता था। उसी समय से मनुष्य की दस उंगलियां दस की संख्याएं तथा अंकगणित की पद्धति का अन्वेषण हुआ। वैदिक काल में यज्ञों की आपूर्ति के लिए अंकगणित, ज्यामिति, इत्यादि का उपयोग हुआ। अंकों के दस संकेतों का जन्म व शून्य की शुरुआत होने का वर्णन हमारे ग्रन्थों में स्पष्ट किया गया है। संख्याओं की दुनिया समय के साथ पनपती रही और धीरे धीरे यह विकसित होती चली गई।

आज हर क्षेत्र में चाहे शिक्षा, विज्ञान, शास्त्र, व्यापार, वाणिज्य या कृषि हो, अंकों की गणना अर्थात गणित की आवश्यकता होती है। अब अंक प्रणाली अत्यंत सरल होने के साथ हम सब के अपने कार्यों को पूर्ण करने में एक सुचारू सुविधा के रूप में उपलब्ध है। कहना गलत नहीं होगा कि अंकों के बिना हमारा जीवन अगणनीय है।

तकनीकी सहयोग से कोई भी व्यक्ति एक सरल जोड़ का उपयोग कर के अपने जीवन संख्या की गणना कर सकता है, जो उन्हें स्वयं को खोजने और अपनी क्षमताओं को समझने की ओर प्रेरित अवश्य करता है। अंक ज्योतिष (न्यूमरोलॉजी) के अनुसार अपने मूलांक को पता करने की बुनियादी जरूरत है। जन्म के दिनांक, मास और साल के अंकों का योग करके जन्मतिथि का मूलांक निकला जाता है। अंक ज्योतिषियों के अनुसार तथाकथित आप के इसी मूलांक को मुख्य आधार मानकर भविष्य और उनके भाग्य का सटीक आकलन किया जा सकता है। व्यक्ति के नाम के प्रत्येक अक्षर के अंक को निश्चित करके नाम का मूलांक निकाला जा सकता है। हम कई लोगों को अपने नाम के अक्षरों को शुभ अंकों के अनुसार, बदलते हुए देखते हैं। यही नहीं, वास्तु के अनुसार भी अपने घरों के पतों में शुभ नम्बर है, सुना और देखा होगा। कहने का तात्पर्य यही है कि चाहते या न चाहते हुए भी उनके नजरिये में अंकों को महत्व देते हुए देखते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारी जिन्दगी में अंकों का महत्वपूर्ण स्थान हासिल है। विशेषकर हमारी रोजमर्रा की दिनचर्या में अधिकांश कार्य नम्बरों के गणित के इर्दगिर्द ही घूमते हैं। बस जिम्मेवारी के तहत इन गतिविधियों में झांकने का प्रयत्न है।

जिन्दगी की गाड़ी, घड़ी की सुई के अंकों के साथ चलती है। पांच मिनट लेट, तो बच्चों की बस, या आप की मैट्रो या फ्लाइट छूट जाती है। वर्ष, महीने, पक्ष, तिथि, घंटे, मिनट तथा सेकंड को व्यक्त करने का माध्यम अंक ही है। एक पल में प्रकृति अपना रौद्र रूप दिखा जाती है। कितनी बार जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों को खोने व अनहोनी का अनुभव भी घड़ी से खिलवाड़ करते हुआ है। हमारी जीवनशैली में अंक इस कदर पैर जमा कर बसे हुए हैं कि हमारे लिए इनकी महत्ता को ठुकराना असंभव है। यह हमारी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। गौरतलब है, दैनिक जीवन में अंकों के इस्तेमाल के फायदे गौरवपूर्ण हैं।

जिस तरह पूजा के लिए दिन निर्धारित है उसी प्रकार समय व मुहूर्त भी तय रहता है। हवन व यज्ञों में आहूति की गिनती नम्बरों के आधार पर करना ही शुभ होता है।

हम सभी सुबह से शाम तक की दिनचर्या समय-सारणी के अनुसार चलाते हैं। इसे टाइम मैनेजमेंट के नाम से परिभाषित किया गया है। फोन पर मित्रों और परिवार के साथ बातचीत अंकों के जरिये ही सम्भव है। आपसी दूरी अंकों के सौजन्य से ही कम होने का अहसास हो पाता है।

घरों और ऑफिस या देश के वित्तीय बजट बनाने में मददगार साबित होते हैं।

बाजारों में वस्तुओं को खरीदने और बेचना सम्भव नहीं होता। अगर हिसाब-किताब रखना, खर्चे की गणना करना नहीं कर पाते। महिलाओं को अपनी रसोई में सही अनुपात और प्रतिशत नापने के लिए कैल्कुलेटर की जरूरत रहती है।

आज के समय में यूट्यूब और फेसबुक पर आप के चाहने वालों की संख्या को गिन कर आंकड़ा बनाना सम्भव नहीं हो जाता। टीवी चैनलों का कन्ट्रोल पूरी तरह रिमोट के अंकों पर निर्भर रहता है।

इसलिए जीवन का प्रत्येक पल गणनीय है। हम सब जो भी नियोजित या अनियोजित कार्य निभा रहे हैं, वह पूर्व निर्धारित रहता है। अंकों से छेड़छाड़ न करें। बस इसके सकारात्मक पहलू की ओर आकर्षित होकर अंकों की दुनिया का अनुभव करें।